तुम कैसे लडाई के मैदान में हो। किसके साथ लडाई है। पांच विकारों रुपी माया पर जीत पानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। भारत वासियों को तो जरुर ही दैवी राजधानी का बसी चाहिये। राजधानी थी अब नहीं है। कहाँ गई वो फिर बाप बैठ समझाते हैं। शास्त्र सभी है भक्ति मार्ग के। ज्ञान तो नहीं है नां। ज्ञान सिर्फ एक रुहानी बाप में ही है। उसको ही रुहानी ज्ञान कहा जाता है जो कि सुप्रीम रुह आकर पढाते है। अपने को आत्मा समझ कर बैठो। हम आत्मा ही आकर शरीर से पार्ट बजाते है। मनुष्य यह नहीं जानते। सतयुग में सिर्फ भारत ही था। और कोई धर्म न था। न कोई और खण्ड था। भारतवासी देवताओं कितना शाहूकार थे। फिर क्या हुआ। बाप क्यों को समझाते हैं। सभी कहते है हम पतित हो गये हैं। पतितों को पावन बनाने वाला आओ। आत्मा जानती है यह पतित शरीर है। मै भी पतित हूँ। बुलाते भी है लिबरेटर आकर लिबरेट करो। आकर गाईड बनो। कब आकर लिबरेट करेंगे यह नहीं जानते। अपनी2 भाषा में बुलाते रहते है। कि आकर लिबरेट करो गाईड बनो शांतिधाम ले जाओ। क्यों कि शांतिधाम सब धाम ले जाने वाला एक तो xxxxx बाप है। अभी हम सब धाम जावेंगे वाया शांतिधाम। यह है x स्वधाम। तुम जानते हो अभी हम घर जा रहे है। वह है हम आत्माओं का रहने का स्थान जिसको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा जाता है। आत्मा क्या है कैसे जावेंगे, क्यों भटकती है यह तुम जानते हो। मनुष्य तो बिलकुल ही तुच्छ बुधि है। अभी तुम सब कुछ जानते हो। आस्तिक भी बने हो फिर त्रिकालदर्शी भी बने हो। अभी तुम धन के बने हो धन से स्वर्ग का वर्सा भी लेते है। बाप सिर्फ कहते है हे आत्मायें अपने बाप को याद करो। देह को याद न करना है। तुम विगर देह हो। फिर देह में आ कर पार्ट बजाया। अब फिर विदेही आत्मा अपन को समझ यह याद में रहना बहुत इजी भी है फिर डिफिकल्ट ते डिफिकल्ट भी है। दैवी गुण भी धारण करो। लड़ाई झगडा बिलकुल ही न करो। सतगुरु के निन्दक ठौर न पावे। बाप टिचर गुरु तीनों की निन्दा कराते हो तो फिर ठौर पाये न सकेंगे। पिछाडी में यह भी साo होगा। इतना तुमको समझाया फिर भी भूले की। पहले नम्बर में है देह अभिमान, फिर और विकार है बाल बच्चे। अच्छा। ओम।

रात्रीक्लास:- 5-8-67 ,:- सन्यासि कब हाथ नहीं जोड़ेंगे। क्योंकि समझते है हम पवित्र है। और यह अपवित्र है। अपवित्र को पवित्र हाथ कैसे जोड़ेंगे। बाप कहते हैं मुझे बुलाया है कि पतित को पावन बनाने लिए आओ मैं तो हूं ही पावन। अब यह हाथ जोड़ते है तो मुझे भी हाथ जोड़ना पड़े। देवताएं पावन है वह किसको कब हाथ नहीं जोड़ेंगे। बाबा को सभी को हाथ जोड़नी पड़ती है। विकारी हाथ जोड़ते है तो रिटर्न में हाथ जोड़ना पड़े। नहीं तो समझेंगे यह रिटर्न में रेसपान्स नहीं करते। तो हाथ जोड़ना ही पड़े। हाथ इनको जोड़ते है तो इनको भी जोड़ना पड़े। इनकी आत्मा तो पवित्र नहीं है, शिव बाबा की आत्मा पवित्र है। यह पवित्र बन रहे है। पावन आत्मा को पावन शरीर चाहिए। बाप कहते है मुझे पावन शरीर कहां से मिलेगा। जिसमें प्रवेश करुं पतित दुनिया में है ही सभी पतित। पावन दुनिया में तो मैं आता नहीं हूं। मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। कि पतित शरीर, पतितदुनिया में आता हूँ। यह भी समझते हो कलयुग से सतयुग जरुर बनना है। बाप रचता है तो रचना जरुर नई दुनिया के रचेंगे। फिर पुरानी होती है ड्रामा प्लैन अनुसार। बच्चे जानते है हमारे सुख के दिन आ रहे है। अब जल्दी जावेंगे। परन्तु अभी सम्पूर्ण कहां बने हो। जब विनाश होगा मुसलधार बरसात पड़ेगी, रक्त की नदी बहेगी तब तुम कहा होंगे। कि अब हम नई दुनिया में जावेंगे। वह भी जावेंगे तब जब पवित्र बनेंगे। क्योंकि शांतिधाम में सभी आत्मायें पवित्र रहती है। विनाश होगा तो समझना चाहिए कि राजधानी पूरी स्थापन हो गई। राजाई पूरी स्थापन हुई है जब। बम छोड़ेंगे, अर्थक्वेक होंगे उस समय तुमको साo होती रहेगी। खुशी होगी समझेंगे अब हम चले। याद से ही शक्ति मिलेगी। विकार में जो रहेंगे तो और ही गिर पड़ेंगे। देखना चाहिए कोई आसुरी कर्म तो नहीं करता हूं। दैवी गुणों का भी चार्ट, ये का भी चार्ट रखो। फिर समझ सकते हो हम लक्ष्मी के बने लायक है। डिनेस्टी है ना। पुरुषार्थ करना चाहिए।

[illegible] जितना पढाई करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। सुबह वा शाम को हर एक से पूछना चाहिये कि आज कोई को दुःख तो नही दिया है। कोई अकर्तव्य कार्य तो नही किया है। बे कायदे काम तो नही किया है। पूछ कर फिर समाचार देना चाहियें। जो भी ब ****** सेन्टर्स पर है उनको हर रोज कचहरी करनी चाहिये। कितना याद की यात्रा मे रहे? फिर राय देनी चाहिये। ********** ** *** **** ********* जैसे चारो धामो की यात्रा करते है नां। तुम्हारी यात्रा तो रोज ही है जब तक कि वहां पर जाकर पहुचो। तुम्हारी तो एक ही तरफ की यात्रा है। सो भी वृषी की ही है। उठते बैठते स्नान करते बाप को याद करना है। तुमको तो सिर्फ अन्दर मे ही याद करना है। याद दिल मे ही हो मुख से तो बोलना भी नही है। बाबा की याद हो तब प्राण तन से निकले। और किसीकी याद आई तो नाम। देह सहित ही देह के सभी सम्बन्ध तोडने है नां। बेहद का सन्यास का शान्तिधाम सुख धाम की याद करना है। हम तो वहां के ही रहने वाले है हम तो शान्ति पूर्ण विश्व के मालिक है। अब चक्र पूरा होता है हम घर जावेंगे। फिर आकर विश्व का मालिक बनेंगे। अन्दर मे खुशी रहनी चाहिये। दुनियां भर मे कोई भी ऐसा पढाते नही है। यह तो पढाई ही पढाई है। सत्संग का सत्संग है। सत का संग तारे कुसंग बोरे। अब खुशी रहनी चाहिये कि हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते है। अभी हम राजाई मे जा रहे है। अभी तो राजाई नही है नां। माया अपोजीशन करती है तो दो खुशी नही रहती है। भक्ति मार्ग मे यह मन्दिर आद बनाते है तो कितना खर्चा आद करते है। कितना बडा गपोडा मारते है कि इसने 2 हजार वर्षो की यह बहुत पुरानी चीज है। बाप कहते है कि 5000 वर्ष से पुरानी कोई वस्तु हो नही सकती है। वो तो लाख वर्ष की पुरानी भी कह देते है। तुम कितने मूढ़ हुये थे। तुमको ही अब बाप समझदार बना रहे है। बाप जानते है कि बच्चे भक्ति कर थके बहुत थके हुये है। इनके हाथ पांव दबाने चाहिये। हम थोडेई थके है जो कि हमारे पांव हाथ दबाते हो। द्रोपदी के भी पांव आद दबाते थे नां। अपने पदम भाग्य की अन्दर ही अन्दर मे सराहना करो। बाप कहते है कि तुम अपने 84 जन्मो को नही जानते हो मै ही बताता हूं। बाप से हम अपना राज्य भाग्य लेते है। विश्व मे भारत का राज्य था। अब तो वो देवतायें भी नही है। धर्म कर्म भ्रष्ट हो गये है। अब हम फिर सो देवी देवता बन रहे है। खुशी होनी चाहिये नां। बाप टीचर गुरु की याद कभी भूल नही होनी चाहिये। माया तो इतनी जबरदस्त है जो कि याद भुला देती है। दिल वाला मन्दिर तो देखो तुम्हारी है यहां पर यादगार है नां। वण्डर है नां। हम तो है चैतन वो है जड। अभी तुमको पता पडा है कि यह तो हमारा ही यादगार बना हुआ है। तुमको भी मन्दिर देखकर बहुत खुशी होती होगी। बच्चो को तो आपस मे बहुत प्रेम से रहना चाहिये। देवताओं से भी जास्ती तुम ब्राह्मणों की महिमा है। तुम तो सभी को देवता बनाते हो नां। बाप तो सुख दाई है तुम बच्चो को भी बनना है। बाप तो सभी को सुख देने वाला है नां। तुम भी सबको सुख ही दो। मनसा वाचा कर्मणा कोई को भी दुःख नही देना है। तुम जानते हो कि यह देवतायें ही भारत मे श्रेष्टाचारी थे। कितने तो मन्दिर ही है। कितने देवताओं की पूजा होती है। परन्तु जानते तो किसी को भी नही है नां। जो देवी देवतायें है उनको ही गाड गाडेज कहते है। कोई ने तो उनको ऐसा बनाया ही होगा नां। तो शिव बाबा ने ही उनको बनाया है। तुम भी कहते हो कि हम यह बनेंगे। तो फिर श्रीमत पर चलना पडेगा नां। उसके लिये तो फिर अच्छी रीती पढना होता है। तुम बच्चो को तो पढाई का कितना नशा रहना चाहिये। विश्व का मालिक बनते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिये। बाबा पढाते है दादा के रहे तो इतने ऊंच ते ऊंच से जो पढाई पढते हो तो उसको तो कितना नशा रहना चाहिये। अभी हम भी गणधारन बन रहे है। क्योकि राजधानी स्थापन हो रही है नां। तो कितनी खुशी होनी विकारो मे जाने वाले को तो बाबा की याद भी नही तो खुशी भी नही रह सकती है। गुडनाईट